1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

यद्यद्यामि तदा भर।
अथर्ववेद 20/118/2
हे प्रभो! जो-जो मैं मांगू वह-वह मुझे प्रदान कर।
O God ! shower your blessing on me.

वर्ष 42, अंक 12 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 4 फरवरी, 2019 से रविवार 10 फरवरी, 2019
विक्रमी सम्वत् 2075 सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2018 में पधारने के लिए आभार व्यक्त

गृहमन्त्री श्री राजनाथ सिंह जी को महासम्मेलन की फोटो एलबम एवं शाल भेंट

केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री राजनाथ सिंह जी को धन्यवाद ज्ञापित करते महाशय धर्मपाल जी, महामन्त्री श्री विनय आर्य जी।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की स्मृति फोटो एलबम भेंट करते श्री योगेश आत्रेय जी एवं श्री विनय आर्य जी।

- विस्तृत समाचार पृष्ठ 7 पर

महाशय जी को फूलों का गुलदस्ता भेंट करते श्री राजनाथ सिंह जी।

अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन-2018 में विशेष सहयोग के लिए डी.ए.वी. संगठन के प्रधान

श्री पूनम सूरी जी का सम्मान एवं महासम्मेलन की फोटो स्मृति भेंट

नई दिल्ली में 25 से 28 अक्तूबर, 2018 को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त तत्त्वावधान में सम्पन्न हुए अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2018 में विशेष सहयोग के लिए प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजमैंट समिति के प्रधान पद्मश्री श्री पूनम सूरी जी को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, महामन्त्री श्री विनय आर्य, टंकारा समाचार के सम्पादक श्री अजय सहगल एवं अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के कोषाध्यक्ष श्री योगेश आर्य ने आर्य गौरव सम्मान से सम्मानित तथा महासम्मेलन की स्मृति (फोटो एलबम) भेंट की। इस अवसर पर आर्य प्रादेशिक सभा के मन्त्री एवं प्रकाशन निदेशक श्री एस.के. शर्मा जी की गरिमायी उपस्थित रही।

डी.ए.वी. कॉलज मैनेजमैंट समिति के प्रधान श्री पूनम सूरी जी को आर्य गौरव सम्मान एवं फोटो स्मृति (एलबम) भेंट करते दिल्ली सभा के प्रधान एवं महासम्मेलन संयोजक श्री धर्मपाल आर्य जी। साथ में हैं श्री विनय आर्य जी, अजय सहगल जी, श्री एस. के शर्मा जी एवं श्री योगेश आर्य जी।

195वां महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव

दयानन्द दशमी (फाल्गुन कृष्ण 10) तद्नुसार 28 फरवरी एवं 1 मार्च, 2019

समस्त आर्यसमाजें उत्साह के साथ आयोजित करें

समस्त आर्यजनों, आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों के लिए सूचनार्थ है कि हम सबके प्रेरणा स्रोत आर्यसमाज के संस्थापक **महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्मदिवस** दयानन्द दशमी (फाल्गुन कष्ण 10) जोकि इस वर्ष **28 फरवरी एवं 1 मार्च** को है। भारत सरकार की ओर इस दिन 1 मार्च को एच्छिक अवकाश घोषित है तथा कुछ राज्यों में राजपत्रित अवकाश भी है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से इस वर्ष पूर्वी एवं पश्चिमी दिल्ली मे दोनों दिन भजन संध्या का आयोजन किया गया है। अत: आप सबसे प्रार्थना है कि आप इसके आयोजन की तैयारियां अभी से आरम्भ कर दें और दोनों दिन **सार्वजनिक स्थानों पर यज्ञ, साहित्य वितरण, भण्डारा/ ऋषि लंगर, शोभा यात्रा, भजन संध्या/काव्य संध्या** आयोजित करके जनसाधारण एवं क्षेत्र के प्रतिष्ठित लोगों को आमन्त्रित करें। साहित्य वितरण के लिए लघु सत्यार्थ प्रकाश, आर्यसमाज के स्वर्णिम सूत्र, एक निमन्त्रण, महर्षि दयानन्द जी की जीवनी आदि सभा कार्यालय में उपलब्ध है, प्राप्त करने के लिए 9540040339 पर सम्पर्क करें। *- महामन्त्री*

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में समस्त आर्यसमाजों के सहयोग से

195वें महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव पर भव्य भजन संध्या

28 फरवरी, 2019 : सायं 4 बजे से सी-ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली	1 मार्च, 2019 : प्रात:9 बजे से महर्षि दयानन्द गौसम्वर्धन केन्द्र, गाजीपुर

अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर महर्षि दयानन्द जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करें

निवेदक
धर्मपाल आर्य - प्रधान
विनय आर्य - महामन्त्री
शिव कुमार मदान - संयोजक-जनकपुरी
हरिओम बंसल - संयोजक-गाजीपुर

प्रयागराज कुम्भ मेले : 15 जनवरी से 4 मार्च, 2019 में

आर्यसमाज का वेद प्रचार शिविर

संगम तट पर शोभायात्रा एवं भजन संध्या

दिनांक : 14-15 फरवरी, 2019

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, जिला आर्य प्रतिनिधि सभा प्रयाग, आर्यवीर दल एवं स्थानीय आर्यसमाजों के सहयोग से कुम्भ मेले में आर्यसमाज की ओर से वेद प्रचार शिविर लगाया गया है। इस अवसर पर 14-15 फरवरी को शोभायात्रा एवं यज्ञ-भजन-प्रवचन का आयोजन किया गया है। आर्यजनों से निवेदन है कुम्भ में प्रचार के माध्यम से एक बार फिर पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराने में सहयोगी बनें। अधिक जानकारी के लिए दिल्ली प्रभारी श्री सतीश चड्डा जी (93 13013123) से सम्पर्क करें। विस्तृत यात्रा कार्यक्रम पृष्ठ 8 पर दिया गया है। *- संयोजक*

वेद-स्वाध्याय

मधु-शास्त्र विद्या की महिमा

जिह्वाया अग्रे मधु मे जिह्वामूले मधूलकम्।
ममेदह क्रतावसो मम चित्तमुपायसि।। - अथर्व. 1/34/2
ऋषि: अथर्वा।। देवता - **मधुवनस्पति:।।** छन्द: **अनुष्टुप्।।**

शब्दार्थ - मे=मेरी **जिह्वाया: अग्रे**= जिह्वा के अग्रभाग में **मधु**= मिठास हो और **जिह्वामूले**= जिह्वा के मूल में **मधूलकम्** = और भी अधिक मिठास, मिठास का झरना हो। हे मधो! तू **इत् अह**= अवश्य ही **मम**=मेरे **क्रतौ**= प्रत्येक कर्म में, प्रत्येक बुद्धि में **अस:**= विद्यमान रह और तू **मम**= मेरे **चित्तम्**=अन्त: करण के चित्तप्रदेश तक **उपायसि**=पहुँच जा, व्याप्त हो जा।

विनय - मैं माधुर्य-प्राप्ति की साधना में लगा हूँ। संसार की प्रत्येक वस्तु के सेवन द्वारा मैं अपने में मधुरता बसाना चाहता हूँ। हे माधुर्य! तुम मेरे सम्पूर्ण जीवन में घुल जाओ और मेरे सम्पूर्ण जीवन को माधुर्यमय कर दो। मैं वाणी से मीठा ही बोलूँ। मेरी जीभ के अग्रभाग में मधु हो और मेरे जीभ का मूल और भी अधिक मधु से भरा हो। हे मधुमय प्रभो! माधुर्य को न समझने वाले मनुष्य केवल काम निकालने के लिए भी मधुरता का आश्रय लेते हैं, अत: वे ऊपर के व्यवहार में, दिखावट में, मधुरता ले-आना काफी समझते हैं। वे जिह्वा-मूल में, अन्दर-अन्दर द्वेष रखते हुए भी जिह्वाग्र में प्रेम और माधुर्य ही प्रकट करते हैं, पर उन्हें मालूम नहीं कि ऐसे धोखे के माधुर्य से तो कटुता ही लाख दर्जे अच्छी है। ऐसे झूठे माधुर्य से वास्तव में कोई भी काम सिद्ध नहीं होता। वे बेचारे माधुर्य की असली अपार शक्ति को, मैत्री के महाबल को नहीं समझते, अत: मेरी वाणी से तो जो प्रेममय मधु झरा करता है वह सदा मेरे वाणी-मूल से, मेरे हृदय से, मेरे प्रेमभरे मानससोत से ही आकर झरता है। मेरा एक-एक कर्म भी मधुमय पुष्पों को बरसाता है। हे माधुर्य! तुम मेरी प्रत्येक चेष्टा में, प्रत्येक गति में, प्रत्येक व्यवहार में न केवल समाये हुए रहो, अपितु मेरी प्रत्येक सोच में, प्रत्येक विचार में, प्रत्येक निश्चय में तुम्हारा वास हो। मेरे अहर्निश का एक-एक संकल्प भी मधुमय हो। हे मधो! तुम मेरे सम्पूर्ण अन्त:करण में ऐसे रम जाओ कि मेरा चित्तप्रदेश भी इससे अव्याप्त न रहे, अर्थात् मेरी एक-एक वासना भी माधुर्य से वासित हो जाए और मैं अपनी स्मृति व स्वप्न में भी कभी कोई द्वेष, अमैत्री व कटुता का स्वप्न तक न ले-सकूँ। हे मेरे प्रेम व ज्ञानस्वरूप प्रभो! मैं तुम्हारे मधुरूप का उपासक हुआ हूँ।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

केन्द्रीय विद्यालय में प्रार्थना के सन्दर्भ में सुप्रीम कोर्ट में दायर याचिका

यह हमला संस्कृत पर है या संस्कृति पर?

..... क्या अब संस्कृत के श्लोकों पर भी अदालत की कुंडिया खटका करेंगी? जबकि किसी भी देश की संस्कृति उसका धर्म उसी की भाषा में ही समझा जा सकता है। हिंदी और संस्कृत तो हमारे देश के मूल स्वभाव में हैं। क्या अब देश के मूल स्वभाव पर भी न्यायालय का डंडा चलेगा। कितने लोग जानते है कि संस्कृत भाषा अन्य भाषाओ की तरह केवल अभिव्यक्ति का साधन मात्र ही नहीं है। अपितु वह मनुष्य के सर्वाधिक संपूर्ण विकास की कुंजी भी है...

इस सत्य से कैसे इंकार किया जा सकता है कि संस्कृत भाषा हमारी सभ्यता और संस्कारों की जननी है, संस्कृत भाषा विश्व की सबसे श्रेष्ठ भाषाओं में से एक है। विश्व में प्रचलित अनेक भाषाओं की उत्पत्ति संस्कृत भाषा से ही मानी जाती है. इसके अलावा संस्कृत भाषा अतीव सहजम अतीव मधुरम है जिस प्रकार आत्मा अमर है उसी प्रकार संस्कृत भाषा भी अपने विशाल-साहित्य, लोक हित की भावना, विभिन्न प्रयासों के द्वारा नवीन-नवीन शब्दों के निर्माण की क्षमता आदि के द्वारा अमर है। विभिन्न सभ्यताओं के निर्माण में संस्कृत का सर्वाधिक महत्त्वशाली, व्यापक और संपन्न स्वरूप बसता है।

यही कारण है कि श्रीलंका जैसे बौद्ध धर्म का पालन करने वाले देश में कोलम्बो विश्वविद्यालय का ध्येय वाक्य है - "बुद्धि: सर्वत्र भ्राजते:" और विश्व की सबसे बड़ी मुस्लिम आबादी वाले देश इंडोनेशिया की जलसेना का ध्येय वाक्य हैं "जलेष्वेव जयामहे" जोकी संस्कृत भाषा में है। लेकिन ये वाक्य वहां कभी साम्प्रदायिकता के दायरे में नहीं आये। परन्तु हमारे देश में हमारी ही भाषा अब साम्प्रदायिक और अधिकारों का हनन करने वाली हो गयी।

देश भर के कन्द्रीय विद्यालयों में "असतो मा सद्गमय" अर्थात हमें असत्य से सत्य की ओर ले चलो और "ओम सहनावावतु"अर्थात ईश्वर हमारी रक्षा एवं पालन-पोषण करें जैसे श्लोक अब थोड़े दिनों बाद साम्प्रदायिकता के दायरे में न आ जाये यह कहना कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

हाल ही में संस्कृत भाषा से जुड़ें इन श्लोकों पर सुप्रीम कोर्ट के पांच जजों की संवैधानिक पीठ इस पर विचार करेगी कि यह श्लोक विद्यालयों में बोले जाये या नहीं मसलन यदि हम अब संस्कृत के शब्द बोलेंगे तो किसी अल्पसंख्यक के अधिकारों का हनन हो सकता हैं। क्योंकि सुप्रीम कोर्ट में मध्य प्रदेश के सिंगरौली जिले के विनायक शाह ने एक जनहित याचिका दायर कर केन्द्रीय विद्यालयों में इन श्लोकों के गाए जाने पर रोक लगाने की मांग की है। विनायक शाह के अनुसार केन्द्रीय विद्यालयों की प्रार्थना में शामिल ये श्लोक अल्पसंख्यकों के धार्मिक अधिकार एवं नास्तिकों, अनीश्वरवादियों, संशयवादियों, तर्कवादियों और ऐसे लोग जिनका प्रार्थना की व्यवस्था में विश्वास नहीं है उनके अधिकारों का उल्लंघन करते हैं।

हालाँकि इस मामले की सुनवाई के दौरान केंद्र का पक्ष रखते हुए सॉलीसिटर जनरल तुषार मेहता ने तर्क दिया कि संस्कृत के श्लोक सार्वभौमिक सत्य की बात करते हैं और सिर्फ संस्कृत में इनका लिखा जाना इन्हें सांप्रदायिक नहीं बनाता। इस पर जस्टिस नरीमन ने कहा कि जिन श्लोकों का जिक्र किया गया है, वे उपनिषदों से लिए गए हैं।

इस पर सॉलीसिटर जनरल ने जवाब दिया कि सर्वोच्च न्यायालय के प्रत्येक अदालत कक्ष में 'यतो धर्मा स्ततो जय:' लिखा हुआ है, यह सूक्ति वाक्य महाभारत से लिया गया है। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि 'सर्वोच्च न्यायालय धार्मिक है।' इस पर दो जजों की खंडपीठ ने कहा कि इस विषय पर संवैधानिक पीठ को विचार करने दें। केन्द्रीय विद्यालयों में संस्कृत में होने वाली प्रार्थना को लेकर विनायक शाह के अलावा जमीयत उलेमा ए हिंद ने भी शीर्ष अदालत में चुनौती दी है।

असल में धर्मनिरपेक्षता की यह नई बीमारी पिछले कुछ समय से देश में बड़ी तेजी से फल फूल रही है। इसमें कभी संस्कृत भाषा, तो कभी भारत माता की जय, कभी राष्ट्रगीत वंदेमातरम् और तो और राष्ट्रगान भी साम्प्रदायिक हो चुका है। कुछ समय पहले बच्चों की किताब में 'ग' से गणेश सांप्रदायिक हुआ और उसकी जगह 'ग' से 'गधा' धर्मनिरपेक्ष ने ले ली थी। अब डर इस बात का भी है कि इनके अनुसार कुछ दिन बाद देश का नाम भी साम्प्रदायिक न हो जाये और इसे भी बदलने के लिए नये नाम किसी विदेशी शब्दकोष से ढूंढकर सुझाये जाने लगे।

हमें नही पता कि इन श्लोकों में में कौनसे धर्म का या किस धर्म के भगवान का नाम आ रहा है जो अल्पसंख्यकों के धार्मिक अधिकार का हनन करता है तथा नास्तिकों, अनीश्वरवादियों अधिकारों का उल्लंघन करता है। दूसरी बात यदि स्कूल में बोले जाने वाले संस्कृत के श्लोक अधिकारों का उल्लंघन करते हैं तो माननीय उच्च न्यायालय और उच्चतम न्यायालय के चिह्न नीचे से 'यतो धर्मस्ततो जय:' का वाक्य भी हटाया जायेगा?

इसके अलावा भारत के राष्ट्रीय चिह्न से 'सत्यमेव जयते', दूरदर्शन से 'सत्यं शिवम् सुन्दरम', आल इंडिया रेडियो से 'सर्वजन हिताय सर्वजनसुखाय', भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी से 'हव्याभिर्भग: सवितुर्वरेण्यं' और भारतीय प्रशासनिक सेवा अकादमी से 'योग: कर्मसु कौशलं' शब्द भी इस हिसाब से अल्पसंख्यकों के धार्मिक अधिकार का हनन करता है तथा नास्तिकों, अनीश्वरवादियों अधिकारों का उल्लंघन करता है।

इसके अलावा सैन्य अनुसंधान केंद्र का संस्कृत ध्येय-वाक्य 'बलस्य मूलं विज्ञानम्', भारतीय थल सेना का 'सेवा अस्माकं धर्म:' और वायु सेना का 'नभ: स्पृशं दीप्तम्' से लेकर देश की रक्षा में तैनात सभी रेजीमेंटों और सभी सरकारी इकाइयों के ध्येय-वाक्य संस्कृत भाषा में है।

इसमें कौनसा ऐसा शब्द है जो किसी धर्म या पंथ की भावना पर हमला कर रहा हैं? क्या अब संस्कृत के श्लोकों पर भी अदालत की कुंडिया खटका करेगी? जबकि किसी भी देश की संस्कृति उसका धर्म उसी की भाषा में ही समझा जा सकता है। हिंदी और संस्कृत तो हमारे देश के मूल स्वभाव में हैं क्या अब देश के मूल स्वभाव पर भी न्यायालय का डंडा चलेगा। कितने लोग जानते है कि संस्कृत भाषा अन्य भाषाओ की तरह केवल अभिव्यक्ति का साधन मात्र ही नहीं है। अपितु वह मनुष्य के सर्वाधिक संपूर्ण विकास की कुंजी भी है। इस रहस्य को जानने वाले ऋषि मुनियों ने प्राचीन काल से ही संस्कृत को देव भाषा और अम्रतवाणी के नाम से परिभाषित किया है, संस्कृत केवल स्वविकसित भाषा नहीं वल्कि संस्कारित भाषा है इसीलिए इसका नाम संस्कृत है। शायद अब यह सब हमें सोचना होगा क्योंकि देश अपना है, भाषा अपनी हैं और संस्कृति अपनी है, अब यदि हम नहीं सोचेंगे तो कौन सोचेगा?

- सम्पादक

चीन सरकार के नए कानून पर विशेष लेख

क्या चीन में बदल दिया जाएगा इस्लाम?

हाल में विश्व भर के अखबारों की यह सुर्खियां हर किसी को सोचने पर मजबूर कर रही हैं कि क्या वास्तव में चीन इस्लाम को बदलने जा रहा है! सूचनाओं के माध्यम से खबर है कि चीन अपने यहाँ मुसलमानों पर नियन्त्रण करने के लिए एक राजनीतिक अभियान की शुरुआत करने वाला है। इसके लिए एक पंचवर्षीय योजना बनाई जा रही है जिसके तहत इस्लाम का चीनीकरण किया जाएगा ताकि इस्लाम को चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के विचारों के अनुरूप ढाला जा सके। अगर ऐसा हुआ तो यह अपने आप में एक बड़ा क्रांतिकारी कदम होगा जिसकी मांग भी पिछले काफी समय से बार-बार की जा रही है।

इस बात से सारी दुनिया परिचित है कि इस्लाम अपने आपमें एक साम्राज्यवादी विचारधारा है और जिसका लक्ष्य अधिक से अधिक भूभाग पर अधिकार और सातवीं सदी में बनाएं गये कानून से लोगों को हांकना है। कई इस्लामविद इसके लिए हर एक वो रास्ता भी अपनाने से नहीं चुकते जिसे आधुनिक संविधान कई मायनो में अपराध की संज्ञा भी प्रदान करता है। यानि जो भी टकराव है वह सिर्फ आधुनिक संविधान और शरियत कानून के मध्य रहा है। अब हो सकता है चीन इस टकराव को समाप्त करने लिए इस्लाम की अवधारणाओं को अपने कम्युनिस्ट कानून के अनुरूप ढालना चाहता हो।

बताया जा रहा है कि शुरुआत में मुसलमानों को मूल सामाजिक मूल्यों, कानून और पारंपरिक संस्कृति पर भाषण और प्रशिक्षण दिया जाएगा। मदरसों में नई किताबें रखी जाएंगी ताकि लोग इस्लाम के चीनीकरण को और बेहतर ढंग से समझ सकें। सकारात्मक भाव के साथ विभिन्न कहानियों के माध्यम से मुसलमानों का मार्गदर्शन किया जाएगा। हालांकि, इस योजना के बारे में और ज्यादा जानकारी नहीं दी गई है। अभी इसे गुप्त रखा जा रहा है।

.....अब इस्लामवादियों को इस बात की जरूरत है कि परंपरा से अलग हटकर बढ़ा जाए। इसके लिए एक सुधार आंदोलन चलाना होगा जिससे इस्लाम की मूल भावनाओं को आधुनिक दौर में लाया जा सके।.....

.....पवित्र ग्रंथ कुरान को एक ऐतिहासिक दस्तावेज की तरह पढ़ाया जाना चाहिए ना कि किसी ऐसी पुस्तक के तौर पर जिसपर कोई सवाल न उठाया जा सके। अगर सुधार हुए तो तभी सातवीं शताब्दी में बनाए गए कानून 21वीं सदी की जरूरतों को अपना मार्ग बनाने दे पाएँगे।.....

यह बात तो मान्य है कि वतर्मान परिस्थितियों में इस्लाम अपने आप में एक बड़े बदलाव की बाट जोह रहा है। पिछले दिनों सऊदी अरब में महिलाओं के लिए बने कई कठोर कानूनों में बदलाव किया गया हैं। वर्ष 2005 में इस्लामिक लेखक सलमान रुश्दी ने ब्रिटेन से प्रकाशित होने वाले समाचारपत्र द टाइम्स में अपने एक लेख में कहा था कि अब इस्लामवादियों को इस बात की जरूरत है कि परंपरा से अलग हटकर बढ़ा जाए। इसके लिए एक सुधार आंदोलन चलाना होगा जिससे इस्लाम की मूल भावनाओं को आधुनिक दौर में लाया जा सके। रुश्दी ने ये भी तर्क दिया है कि पवित्र ग्रंथ कुरान को एक ऐतिहासिक दस्तावेज की तरह पढ़ाया जाना चाहिए न कि किसी ऐसी पुस्तक के तौर पर जिसपर कोई सवाल न उठाया जा सके। अगर सुधार हुए तो तभी सातवीं शताब्दी में बनाए गए कानून 21वीं सदी की जरूरतों को अपना मार्ग बनाने दे पाएँगे।

अब सवाल यही उठता है इस्लाम के अन्दर यह बदलाव कैसे हो सकता है? चीन के संदर्भ में जो अनुमान लगाये जा रहे है वह इस प्रकार कि इस्लामिक पहनावे में बदलाव किया जायेगा। रोजाना के धार्मिक प्रयोग जैसे नमाज पढ़ना, रोजा रखना जैसी पारम्परिक बाध्यता को खत्म किया जायेगा, साथ ही दाढ़ी बढ़ाने भी पांबदी की तैयारी है। कट्टर इस्लामिक नाम रखने पर पाबंदी होगी और इस्लाम से पहले चीन की संस्कृति को महत्त्व देना होगा। हालाँकि इस पहल की शुरूआती तौर पर चीन की मस्जिदों से इस्लामिक ध्वज उतारकर उनकी जगह चीनी ध्वज भी लगाये जा रहे है।

अब यदि इस प्रश्न को चीन की सीमा पार कर भारत के संदर्भ में रखा जाए मुझे नहीं पता कितना उपयुक्त होगा। किन्तु इतना तय है कि इस बदलाव से काफी धार्मिक संघर्षों एवं राष्ट्रीय मुद्दों को कफन जरुर पहनाया जा सकता है। किन्तु धर्मनिरपेक्षता के ढोंग की राजनीति के रहते यहाँ ऐसा संभव होता दिखाई नहीं देता, क्योंकि जब-जब हमारे पास बदलाव के ऐसे अवसर आये तब-तब हमने बदलाव को अस्वीकार कर वोट बेंक को तरजीह ज्यादा दी।

कौन भूल सकता है 1978 का पांच बच्चों की मां 62 वर्षीय शाहबानो का मामला जिसने तलाक के बाद गुजारा भत्ता पाने के लिए कानून की शरण ली थी। कोर्ट ने सुनवाई के बाद अपना फैसला सुनाते हुए शाहबानो के हक में फैसला देते हुए उसके पति को गुजारा भत्ता देने का आदेश भी दिया था। परन्तु शाहबानो के तलाक भत्ते पर देशभर में राजनैतिक बवाल मच गया और तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी सरकार ने मुस्लिम महिलाओं को मिलने वाले मुआवजे को निरस्त करते हुए एक साल के भीतर सुप्रीम कोर्ट के फैसले को पलट दिया था। अगर यह फैसला ना पलटा गया होता तो जरुर मुस्लिम महिलाओं को सातवीं सदी के एक कानून से तो छुटकारा मिल गया होता किन्तु मुल्ला मौलवियों के दबाव में यह बड़ा बदलाव नहीं हो सका।

असल में आज मुस्लिमों को भी एक बात स्वीकार करनी होगी कि पूरी दुनियां में जो प्रगति और परिवर्तन हो रहे हैं, मुस्लिम उससे कटे हुए नहीं बल्कि ज्यादातर उस परिवर्तन का लाभ उठाने वालों में शामिल हैं, परिवर्तन लाने वालों में नहीं। आधुनिक शिक्षा के विकास के साथ यह स्थिति बदल रही है। मगर मुल्ला-मौलवियों का एक बड़ा वर्ग अब भी पुरानी लीक पर जमा हुआ है। इससे इस तर्क को बल मिल जाता है कि पूरा मुस्लिम समाज कट्टरपंथी है। शायद यही इस्लाम की अस्थिरता का कारण भी है। कहा जाता है कि एक बार मौलाना आजाद ने अपने एक इंटरव्यू में इन्हीं मौलवियों के लिए कहा है, इस्लाम की पूरी तारीख उन मौलवियों से भरी पड़ी है जिनके कारण इस्लाम हर दौर में सिसकियां लेता रहा है।

अब चीन से सबक लेकर सभी उदारवादी मुस्लिमों को समझ जाना चाहिए कि मध्यकालीन पुस्तकों और कानूनों से भले ही उन्होंनें अनेक शताब्दियों तक काम चलाया हो परंतु अब परिस्थितियाँ बदल रही हैं और इस कारण स्वयं ही आगे बढ़कर सामाजिक बदलाव और आधुनिक संविधान को स्वीकार कर लेना चाहिए। इससे ही अनेकों स्थानों से सामाजिक और धार्मिक संघर्षों को मुक्ति मिल सकती है।

- राजीव चौधरी

क्रान्तिकारियों की कथा

नेताजी की सिंह गर्जना

गतांक से आगे -

कांग्रेस को तिलांजलि दे युवक-हृदय सम्राट सुभाषचन्द्र बोस ने 'फ़ारवर्ड ब्लॉक' नामक एक नये दल की स्थापना की। देखते-देखते इसमें भर्ती होने के लिए नौजवानों का तांता लग गया।

सन् 1940 में कांग्रेस के सभापति थे मौलाना अबुल कलाम आज़ाद और भारत के वाइसराय लार्ड लिनलिथगो। अंग्रेजों से समझौता करने के लिए मौलाना आज़ाद के सभापतित्व में रामगढ़ कांग्रेस अधिवेशन की तैयारियां ज़ोरों पर थीं। सुभाष बाबू को कांग्रेस से निकाल बाहर फेंकने में बड़े-बड़े कांग्रेसी नेता फूले नहीं समा रहे थे। भयभीत थे तो बस मारक्विस ऑफ़ लिनलिथगो। वे खूब समझते थे कि कांग्रेस से निकलने के बाद तो बोस पर रहा-सहा अंकुश भी गया। तभी स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने फ़ारवर्ड ब्लॉक के प्लेटफ़ार्म से 'समझौता-विरोधी सम्मेलन' का एलान कर एक ज़ोरदार धमाका किया, जिससे अंग्रेजों के अलावा कांग्रेसियों के भी हाथ-पैर फूल गये। इस सम्मेलन के अध्यक्ष थे स्वयं नेताजी सुभाषचन्द्र बोस।

उन दिनों मैं गुप्तचर विभाग की स्पेशल ब्रांच (राजनीतिक शाखा) में कार्यरत था और नियुक्ति थी मेरी लखनऊ शहर में। इम्पीरियल इंटेलिजेंस ब्यूरो (तत्कालीन केन्द्रीय गुप्तचर विभाग) ने रातों-रात सभी प्रान्तीय सरकारों को खटखटाया कि वे रामगढ़ में आयोजित फ़ारवर्ड ब्लॉक के अधिवेशन में शिरकत करने वाले विभिन्न प्रान्तों से आये अपने-अपने 'सस्पेक्ट्स' (संदिग्ध व्यक्तियों) की गतिविधि 'कवर' करके रिपोर्ट तुरन्त केन्द्रीय सरकार को भेजें।

लखनऊ से रवाना हुए छात्र नेता अंसार हरवानी और सत्यकुमार राय। दोनों ही मुझे कान्याकुब्ज कालेज के छात्र की हैसियत से जानते थे, गुप्तचर रूप में कदापि नहीं। जबकि वास्तव में मैं गुप्तचर था और बाकायदा छात्र होना मेरा छद्मवेश था। दोनों फ़ारवर्ड ब्लॉक के प्रबल समर्थक थे, अत: उनकी गतिविधि पर नज़र रखने का ज़िम्मा मुझे सौंपा गया। तभी तो मैं भी वहां दो रोज़ पहले पहुंच गया। रामगढ़ मैदान में ही दोनों सभाएं होने वाली थीं ठीक शाम साढ़े पांच बजे। दोनों के बीच फ़ासला रहा होगा लगभग तीन सौ मीटर। राष्ट्र गौरव सुभाषचन्द्र बोस के स्वागतार्थ स्वामी सहजानन्द सरस्वती, मास्टर तारासिंह, सरदार शार्दूलसिंह कवीश्वर, अरविन्द बोस, प्रकाशचन्द्र, शचीनद्रनाथ सान्याल आदि अनेक क्रान्तिकारी एक दिन पहले ही पहुंच गए थे।

- क्रमश:

- धर्मेन्द्र गौड़ : साभार : क्रान्तिकारी आन्दोलन के अधखुले पन्ने

क्रान्तिकारी आन्दोलन के अधखुले पन्ने : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्त करने के लिए मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

बलिदान दिवस (10 फरवरी)
बसन्त पंचमी पर विशेष

वीर हकीकत राय : बलिदान की अनूठी गाथा

यह कहानी सुनकर किसका हृदय द्रवित नहीं होता होगा। शायद ही कोई ऐसा हो जिसकी आंखें नम न हो और इसके बाद जेहन में यह सवाल न उभरे कि आखिर ऐसा क्या हुआ था कि एक 14 वर्ष के बच्चे हकीकत राय से समूचा मजहब डर गया था। वीर हकीकत राय तो सैकडों वर्ष पहले बसन्त पंचमी के दिन अपने धर्म पर बलिदान हो गया लेकिन बलिदान होने से पहले इस नन्हे बालक ने अपनी निडरता का जो उदाहरण पेश किया उसे इतिहास मन में लिए हमेशा गर्व से खड़ा रहेगा।

वीर हकीकत राय का जन्म 1720 में सियालकोट (अब पाकिस्तान में) लाला बागमल पुरी के यहाँ हुआ। इनकी माता का नाम कोरा था। लाला बागमल सियालकोट के तब के प्रसिद्ध सम्पन हिन्दू व्यपारी थे। वीर हकीकत राय उनकी इकलौती सन्तान थी। उस समय देश में बाल विवाह प्रथा प्रचलित थी, क्योंकि हिन्दुओं को भय रहता था कि कहीं मुसलमान उनकी बेटियों को उठा कर न ले जाये। जैसे आज भी पाकिस्तान और बांग्लादेश से समाचार आते रहते हैं। इसी कारण से वीर हकीकत राय का विवाह बटाला के निवासी कृष्ण सिंह की बेटी लक्ष्मी देवी से बारह वर्ष की आयु में कर दिया गया था।

उस समय देश में मुगल शासन था। जिन्होंने देश के सभी राजनैतिक और प्रशासनिक कार्यों के लिये फारसी भाषा लागू कर रखी थी। देश में सभी काम फारसी में होते थे। इस कारण हिन्दुओं को भी न चाहते हुए मदरसों में फारसी भाषा सीखनी पड़ती थी। हकीकत राय को भी फारसी भाषा के ज्ञान के लिये मौलवी के पास उसके मदरसे में पढ़ने के लिये भेजा गया। कहते हैं कि वह पढ़ाई में अपने अन्य सहपाठियों से अधिक तेज था, जिसके चलते मुसलमान बालक हकीकत

राय से ईर्ष्या करने लगे थे।

एक बार हकीकत राय का अपने मुसलमान सहपाठियों के साथ झगड़ा हो गया। मुसलमान बच्चों ने हिन्दुओं के महापुरुषों-देवी-देवताओं को लेकर अपशब्द कहे जिसका हकीकत ने विरोध करते हुए कहा, "क्या यह आप को अच्छा लगेगा यदि यही शब्द मैं आपकी बीबी फातिमा के सम्बन्ध में कहुँ? इसलिये आप को भी अन्य के प्रति ऐसे शब्द नहीं कहने चाहिये।"

बस इतनी सी बात थी इस पर मुस्लिम बच्चों ने शोर मचा दिया की इसने बीबी फातिमा को गालियां निकाल कर इस्लाम और मोहम्द का अपमान किया है। जैसा कि अभी हाल ही पाकिस्तान में आसिया बीबी के साथ भी हुआ हैं। वैसे ही उन्होंने हकीकत को मारना पीटना शुरू कर दिया। मदरसे के मौलवी ने भी मुस्लिम बच्चों का ही पक्ष लिया। शीघ्र ही यह बात सारे स्यालकोट में फैल गई। लोगों ने हकीकत को पकड़ कर मारते-पीटते स्थानीय हाकिम आदिल बेग के समक्ष पेश किया। वह समझ गया कि यह बच्चों का झगड़ा है, मगर मुस्लिम लोग उसे मृत्यु-दण्ड की मांग करने लगे।

हकीकत राय के माता-पिता ने भी दया की याचना की। तब आदिल बेग ने कहा मै मजबूर हूँ, परन्तु यदि हकीकत इस्लाम कबूल कर लें तो उसकी जान बख्श दी जायेगी। किन्तु 14 वर्ष के बालक हकीकत राय ने धर्म परिवर्तन से इंकार कर दिया।

मुस्लिम हाकिमों को मोटी रिश्वत देकर हकीकत के पिता ने मामला स्यालकोट से लाहौर भिजवा दिया। किन्तु यहाँ भी वही शर्त रखी गयी जो सिखों के पांचवे गुरु श्री गुरु अर्जुनदेव और नौवें गुरु श्री गुरु तेगबहादुर जी को भी इस्लाम स्वीकार करें या जान देने की शर्त रखी गयी थी। हकीकत राय को मुसलमान बन जाने के लिये तरह तरह से समझाया, डराया व प्रलोभन भी दिया। माँ ने अपने, दूध का भी वास्ता दिया। मगर हकीकत ने कहा माँ! यह तुम क्या कर रही हो। तुम्हारी दी शिक्षा ने ही तो मुझे ये सब सहन करने की शक्ति दी है। मैं कैसे तेरी दी शिक्षाओं का अपमान करूं। आपने ही सिखाया था कि धर्म से बढ़कर इस संसार में कुछ भी नहीं है। आत्मा अमर है तो फिर मैं मौत से क्यों डरूं? हकीकत राय अपने धर्म से टस-से-मस नहीं हुआ, उसने पूछा क्या यदि मै मुसलमान बन जाऊं तो मुझे मौत नहीं आएगी? क्या मुसलमानों को मौत नहीं आती? तो उलेमाओं ने कहा मौत तो सभी को आती है। तब हकीकत राय ने कहा तो फिर मैं अपना वह धर्म क्यों छोडूं जो सभी को ईश्वर की सन्तान मानता है।

हकीकत ने प्रश्न किया आखिर में क्यों इस्लाम स्वीकार करूं जो मेरे मुसलमान सहपाठियों के मेरी माता भगवती को कहे अपशब्दों को सही ठहराता है, मगर मेरे न कहने पर भी उन्हीं शब्दों के लिये मुझसे जीवित रहने का भी अधिकार छीन लेता है। जो दूसरे धर्म के लोगों को गालियां निकलना, उन्हें लूटना, उन्हें मारना और उन्हें पग-पग पर अपमानित करना खुदा का हुक्म मानता हो मै ऐसे धर्म को दूर से ही सलाम करता हूं।

वसंत पंचमी के उत्सव पर मुगल बादशाह मोहम्मद शाह रंगीला के काल में एक नन्हे बालक वीर हकीकत राय को जब वधशाला की ओर ले जाया जा रहा था तो पूरा नगर अश्रुपूरित आंखों से उसे देख रहा था। कहते हैं हजारो लोग "अल्लाहू-अकबर, अल्लाहू-अकबर" चिल्लाते हुये उस बालक पर पत्थर बरसा रहे थे, उसका सारा शरीर पत्थरों की चोट से लहूलुहान हो गया और वह बेहोश हो गया। अब पास खड़े जल्लाद को उस बालक पर दया आ गयी कि कब तक यह बालक यूँ पत्थर खाता रहेगा। इतना सोच कर उसने अपनी तलवार से हकीकत राय का सिर काट दिया। रक्त की धरायें बह निकलीं और वीर हकीकत राय बसन्त पंचमी के दिन अपने धर्म पर बलिदान हो गया। एक माँ की कोख अमर हो गयी। ऐसे महान सपूत वीर हकीकत राय को उनके बलिदान दिवस पर आर्य समाज का शत-शत नमन।

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली के तत्त्वावधान में आर्य विद्यालयों में नैतिक शिक्षा परीक्षा सम्पन्न

लगभग 30 विद्यालयों के 10 हजार से अधिक बच्चों ने दी परीक्षा

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य विद्या परिषद् दिल्ली के तत्त्वावधान में 33 जनवरी को नैतिक शिक्षा परीक्षा का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 30 आर्य विद्यालयों के 10 हजार से अधिक बच्चों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। यह परीक्षा सभी विद्यालयों में पहली कक्षा से बारहवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों के लिए आयोजित की गई, जोकि सभी विद्यालयों में एक ही समय पर प्रारम्भ हुई थी। परीक्षा की विशेषता यह रही कि सभी बच्चे बड़े शांत भाव से अपनी-अपनी परीक्षा में निमग्न थे। आर्य विद्या परिषद् का इस परीक्षा को आयोजित करने का उद्देश्य बच्चों को संस्कारित करना है क्योंकि आज जो शिक्षा बच्चों को दी जा रही है, वह बच्चों को व्यावसायिकता की ओर तो उन्मुख करती है लेकिन वे संस्कारों से वंचित रह जाते हैं। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए आर्य विद्या परिषद प्रतिवर्ष नैतिक शिक्षा परीक्षा आयोजित करती है। दिल्ली के बाहर के विद्यालयों जिनमें नैतिक शिक्षा पाठ्यक्रम लागु है वहां भी परीक्षा आयोजित करने का प्रयास किया जा रहा है। सभी आर्य विद्यालयों से निवेदन है कि अपने यहां परीक्षा आयोजित करने के लिए नैतिक शिक्षा पाठ्यक्रम लागू करें।

पंजाब प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन संपन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्त्वावधान में पंजाब प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन 3 फरवरी 2019 को श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कॉलेज बरनाला में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पंजाब प्रान्त की सभी आर्य समाजों के प्रतिनिधियों एवं आर्यजनों ने भाग लिया। इस प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का शुभारम्भ यज्ञ ज्योति प्रज्जवलन से किया गया।

पंजाब के महामन्त्री श्री प्रेम भारद्वाज जी ने कार्यवाही को आगे बढ़ाते हुए कहा कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के द्वारा आर्य महासम्मेलन की जो श्रृंखला प्रारम्भ की गई है, उस श्रृंखला में यह तीसरा पंजाब प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन है। इससे पूर्व आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में लुधियाना तथा नवांशहर में भी भव्य आर्य महासम्मेलनों का आयोजन किया जा चुका है और आगे भी यह श्रृंखला इसी प्रकार जारी रहेगी। उन्होंने कहा कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब सभा के यशस्वी प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी के नेतृत्व में सम्पूर्ण पंजाब में वेद प्रचार की गति को तीव्र करने के लिए प्रयासरत है।

इस पंजाब प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में सभी का आकर्षण पदमभूषण से सम्मानित महाशय धर्मपाल जी रहे। महाशय धर्मपाल जी के साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य तथा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी उपस्थित हुए। महाशय धर्मपाल जी के स्वागत के लिए पूरा पण्ड़ाल उमड़ पड़ा। इस अवसर पर आर्यजनों का उत्साह देखते ही बनता था। हर कोई उनके साथ चित्र खींचने के लिए व्याकुल था। महाशय धर्मपाल जी ने मंच पर पहुंचकर **मेरा रंग दे बसन्ती चोला** देशभक्ति के गीत पर लोगों का उत्साहवर्धन किया। 96 वर्ष की उम्र में महाशय धर्मपाल जी का जोश देखकर सभी आर्यजनों में जोश और उत्साह का संचार हो गया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी ने महाशय धर्मपाल जी, श्री धर्मपाल आर्य, श्री विनय आर्य जी एवं मास्टर रामपाल जी का स्वागत किया। महासम्मेलन को सम्बोधित करते हुए राजस्थान से पधारे सांसद स्वामी सुमेधानन्द जी ने कहा कि हम सभी को महर्षि दयानन्द का सच्चा सिपाही बनकर आर्य समाज का कार्य करना चाहिए। आर्य समाज की उन्नति तभी हो सकती है जब हम सभी आर्य मनसा, वाचा, कर्मणा एक होकर कार्य करेंगे। उन्होंने सभी आर्यजनों को आर्य सिद्धान्तों को अपने जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी और कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का लक्ष्य सामने रखकर आगे बढ़ने को कहा।

– शेष पृष्ठ 7 पर

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन पंजाब में मंचस्थ अतिथि एवं पदाधिकारीगण सर्वश्री स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सुदर्शन शर्मा, महाशय धर्मपाल, धर्मपाल आर्य, एवं मास्टर रामपाल जी। महाशय धर्मपाल जी को पद्मभूषण सम्मान के लिए नामित किए जाने पर विशेष सम्मान प्रदान करते आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा, मन्त्री श्री प्रेम भारद्वाज, श्री स्वतन्त्र कुमार एवं दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य एवं महामन्त्री श्री विनय आर्य जी। इस अवसर पर उपस्थित आर्यजनों से भरा पण्डाल।

धन्यवाद एवं सम्मान समारोह सम्पन्न

अक्तूबर-2018 में दिल्ली रोहिणी में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए अंतर्राष्ट्रीय महासम्मेलन में देश विदेश से सभी प्रांतीय सभाओं ने न केवल बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया अपितु यथायोग्य हर किसी ने अपना योगदान भी दिया। जिससे आर्यों का यह विशाल महाकुम्भ आर्य समाज के इतिहास के पन्नों पर अपनी अमिट छाप छोड़ते हुए सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

आर्यजनों के योगदान को अन्त:करण से नमन करते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के ओर से सभी समितियों एवं आर्य समाजों के लिए धन्यवाद एवं सम्मान समारोह आयोजन किया गया। इस श्रंखला में आगे बढ़ते हुए शनिवार 2 फरवरी को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से गाजियाबाद राजनगर आर्यसमाज में धन्यवाद एवं सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य ने आर्य केन्द्रीय सभा महानगर गाजियाबाद के पदाधिकारियों, आर्यमहानुभावों का तन-मन-धन से उनके द्वारा किये सहयोग के लिए हृदय से धन्यवाद प्रकट किया। उन्होंने धन्यवाद देते हुए निकट भविष्य में आर्य समाज की आगामी देश, धर्म एवं समाज के लिए शुरू की गयी अनेकों महत्वपूर्ण योजनाओं से भी अवगत कराया। उन्होंने पंचकुला में चल रहे आर्य समाज के अंतर्राष्ट्रीय आर्य सेंटर के बारे में बताते हुए कहा कि यह सेंटर निकट भविष्य में आर्य समाज के लिए संजीवनी बूटी का कार्य तो करेगा ही साथ में इस केंद्र से निकलने वाले आर्य विद्वान और पुरोहित देश विदेश में आर्यसमाज की विचारधारा का एक रूपता से प्रचार प्रसार करेंगे तथा यह केंद्र सभी आर्यजनों के लिए योग, ध्यान, ज्ञान के साथ सुन्दर रमणीय पर्यटन स्थल भी होगा।

आगामी योजनाओं पर प्रकाश डालते हुए श्री विनय आर्य ने बताया कि हाल ही में महाशय धर्मपाल जी के आशीर्वाद से आरम्भ किया गया आर्य मीडिया सेंटर

– शेष पृष्ठ 7 पर

आर्य केन्द्रीय सभा गाजियाबाद की धन्यवाद बैठक को सम्बोधित करते एवं सभा के अधिकारियों एवं कर्मठ कार्यकर्ताओं को स्मृति चिह्न भेंट करते श्री विनय आर्य जी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा हिन्दू अध्यात्मिक एवं सेवा मेला गुरुग्राम में वैदिक साहित्य प्रचार स्टाल

हिन्दू अध्यात्मिक एवं सेवा मेला गुरुग्राम में 1 से 4 फरवरी तक एक भव्य अध्यात्मिक आयोजन सम्पन हुआ, जिसमें केवल हिन्दू धर्म से सम्बन्धित शाखाएं व उपशाखाओं को भाग लेने का अवसर मिला। इस आयोजन का सह सयोजक जे.बी.एम. ग्रुप था। मेले में गुरुग्राम के सभी विद्यालयों के विद्यार्थी और अध्यापिकाओं को आमन्त्रित किया था तथा उनके द्वारा मंच पर संस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया गया।

परोपकारिणी सभा, विचार टी.वी., आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा और गुरूग्राम के आर्य समाजो नें वैदिक प्रचार हेतु स्टाल लेकर पुस्तकें व प्रचार सामग्री रखी। मेले को सफल बनाने में दिल्ली सभा के उपप्रधान श्री ओम प्रकाश आर्य, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के महामन्त्री सतीश चड्ढा, मन्त्री श्री एस.पी. सिंह, परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्री कन्हैयालाल आर्य, जे.बी.एम ग्रुप से श्री हर्ष प्रिय आर्य, श्री निखिल सोनी, विचार टी.वी., श्री नरवीर चौधरी गुरुग्राम, श्री रविप्रकाश तथा अन्य आर्य जनों ने वैदिक प्रचार प्रसार हेतु अपना अमूल्य योगदान दिया। – ***सतीश चड्ढा***

Veda Prarthana - II
Regveda - 26

एतद् वा उ स्वादीयो यदधिगवं
क्षीरं वा।
मासं ना तदेव नाश्नीयात्।।
– अथर्व. 9/6/9

Etad va u swaduyo yadadhigavam kshiram va. Masam na tadeva nashniyat.
- Atharva Veda 9/6/9

There are hundreds of Veda mantras, which describe what foods are good for us to eat and what foods we should not eat. The mantras describe hundreds of food items including various grains, vegetables, fruits, sugar cane, tubers, other root vegetables, herbs and medicinal plants and instruct us how to properly utilize them. The message of these Veda mantras was later expanded and organized as a separate scripture and named Ayurveda which is that branch of knowledge which promotes long life and good health as well as deals with curing disease. Ayurveda describes in detail the attributes of various food, herbs, and medicinal items and how they should be used. In clear terms, it describes their use based season, time of day, locale (e.g. its altitude), illness and other circumstances. In the context of all these factors Aurveda describes what foods should be eaten and what foods are forbidden for good health and long life and we should not eat.

There are two major views regarding what foods should be eaten and what forbidden for our wellbeing. The first view is that all food items currently eaten all over the world including meat and other body parts of various animals, birds, fish, reptiles, and other such as clams, lobsters, prawns, shrimp and even crawling insects. After properly processing these animals, it is okay to eat them either cooked or raw. According to this view, killing all these types of creatures of animal kingdom is not violence because these creatures do not have souls and they were created for the eating benefit of human beings.

The other view is that animals similar to human beings have eyes, ears, nose, legs, arms (or forelegs), chest, belly, breathe, and experience pain or pleasure. The various animals like human beings are born and die, produce babies, raise them to adulthood, sleep and awaken, become fearful or playful, and have souls similar to us human beings. Killing animals is obviously cruel and violent because before being killed the animals are aware of it, they scream and try to run away to escape death. Therefore killing animals is a sin and adharma i.e. a non-virtuous act.

The Vedic principles clearly forbid eating meat and killing animals for the sake of food. Moreover, as stated in this mantra clearly promote eating foods which grow from the soil of mother earth e.g. grains like wheat and rice, beans like lentils and garbanzo, fruits like mango, oranges, bananas and grapes, vegetables like cucumber, zucchini, squashes and gourds, ground vegetables like potatoes, carrots, radishes and ginger etc. Other foods that are recommended as food are milk and milk products like yogurt, butter, cheese etc. derived from cows, water- buffalo, goats and sheep. On the other hand, foods derived from killing animals or birds are forbidden.

If human beings were to witness animals being killed in a slaughterhouse before eating their meat, it is likely that most of them would give up eating meat. In United Kingdom when children were made to watch a television documentary showing animals being killed in a slaughterhouse, most of them gave up eating meat. In Vedic dharma killing animals or birds to eat them is considered equivalent of killing human beings. One Veda mantra recommends death sentence for killing a cow.

Many scientists and physicians in the Western countries, in recent years have described several illnesses, which are more common in meat eaters than in vegetarians. The number of vegetarians over the past many years has been steadily increasing in the so-called civilized countries like USA and many nations of Europe. Human beings by their nature are not meat eaters and if one does not want to believe in the words of the Vedas, there are many valid scientific arguments against meat eating as described in the next paragraph.

First: Meat eating (carnivore) animals like lions, tigers, wolf, dogs etc. drink water by lapping with the tongue, where as human beings drink and swallow water in small swigs/gulps.

Second: Meat eating animals are nocturnal hunters and have eyes suitable for night vision where as human beings are practically blind in the dark.

Third: Meat eating animals in hot weather do not sweat but pant to cool off unlike human beings who have abundant sweat glands.

Fourth: Canines e.g. dogs, wolfs, during copulation are locked in (called copulation tie), this is unlike human sexual intercourse.

Fifth: The newborn babies of meat eating animals generally have closed eyes at birth where as full-term human babies open their eyes soon after birth.

Sixth: Meat eating animals have large pointed canine teeth for tearing flesh, where as human beings canine teeth are small and aligned with other teeth.

Seventh: Meat eating animals have shorter intestines compared to human beings and vegetarian animals.

Eighth: Meat eating animals have larger stomachs with greater hydrochloric acid production to digest meat as compared to human beings.

Ninth: Most meat eating animals have shape and appearance that is frightening, whereas most vegetarian animals look gentler.

May God help us find and learn the truth about the benefits of being a vegetarian versus being a meat eater. May we stop the cruel tradition of killing animals for eating their meat and save the earth from the frantic display of violence and cruelty to animals. Dear God with Your grace may we establish a rule of peace and non-violence on the earth.

To Be Continue....

Eat Vegetarian Foods and Milk Products, Do not Eat Meat

- Acharya Gyaneshwarya

चतुर्वेदीय शतकम यज्ञ

आर्यसमाज मोती नगर के वार्षिकोत्सव के अवसर पर 3 से 10 फरवरी तक वेद प्रचार एवं चतुर्वेद शतकम यज्ञ डॉ. सोमदेव शास्त्री जी के ब्रह्मत्व आयोजित किया जा रहा है। भजन अंकित उपाध्याय जी के होंगे। – ***राजभरत भारद्वाज, प्रधान***

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज कालकाजी,
नई दिल्ली – 110019

प्रधान : श्री रामचन्द्र कपूर
मंत्री : श्री रमेश गाड़ी
कोषाध्यक्ष : श्री आदर्श सलूजा

आओ ! संस्कृत सीखें

संस्कृत वाक्य अभ्यास: शब्द प्रयोगा: (76)

गतांक से आगे....

व्युदक (वि) = सूखा हुआ।

१) कूप: तु व्युदक: अस्ति।
= कुँआ तो सूखा हुआ है।

२) वारि कुत: प्राप्यताम्?
= जल कहाँ से पाया जाय?

व्युष्टम् = प्रभात।

३) इदानी व्युष्टं जातम्।
= अब प्रभात हो गया।

४) तथापि स: न जागर्ति।
= फिर भी वह नहीं जाग रहा है।

व्योष: = सोंठ, पीपल, मिर्च तीनों का मिश्रण (त्रिकटु)

५) व्योषे औषधीया: गुणा: भवन्ति।
= त्रिकटु में औषधीय गुण होते हैं।

व्रणित वि = घायल, चोटिल

६) दुर्घटनायां कश्चित् न व्रणित: जात:।
= दुर्घटना में कोई नहीं घायल हुआ।

व्लेष्क: = फंदा, रस्सी का फंदा।

७) व्लेष्कं मा उद्घाटय।
= फंदा मत खोलना।

८) नोचेत् चौर: पलायिष्यते ।
= नहीं तो चोर भाग जायेगा_ ***क्रमश:***

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय, **मो. 9899875130**

प्रेरक प्रसंग

एक ऐसा अभियन्ता जिसने जीवनभर कभी घूस न ली

पण्डित श्रीगंगारामजी बजवाड़ा जिला होशियारपुर (पंजाब) में जन्मे एक आर्यपुरुष थे। इसी कस्बे में महात्मा हंसराजजी का जन्म हुआ था। पण्डित गंगारामजी ने अमृतसर में ऋषि दयानन्दजी के दर्शन किये थे। आपने पंजाब मैट्रिक में प्रथम स्थान प्राप्त किया, फिर ओवर सीयर बने।

आपने 28 वर्ष तक सरकारी नौकरी की, परन्तु विचित्र बात यह कि जितना वेतन पहले दिन लिया था, उतने पर ही सेवा मुक्त हुए। उन दिनों कोई वेतनमान भी न होते थे, परन्तु वेतन-वृद्धि तो होती ही थी। आपके कार्य की, प्रामाणिकता की, दक्षता की सब अंग्रेज अधिकारी भी प्रशंसा करते थे, परन्तु आपने कभी वेतनवृद्धि माँगी ही नहीं।

आप सब डिविजनल आफिसर भी थे। इनके कार्य की विस्तृत रूपरेखा जानने वाला, इनके ऊपर कोई भी अधिकारी नहीं था तथापि आपने सारे जीवन ऐसी अर्थ-शुचिता दिखाई कि अपने-बेगाने सब आपके चारित्रिक गुणों का यशोगान करते थे। जब अन्य अभियन्ता ओवरसियर दोनों हाथों से धन बटोरा करते थे तब आपने कभी ऐसा सोचा तक नहीं।

पण्डित गंगारामजी ने स्वयं इसके विषय में लिखा है, 'मैं बहुत कुछ गड़बड़ कर सकता था, परन्तु मैं महर्षि दयानन्द और उसके आर्यसमाज का कृतज्ञ हूँ कि उसका सेवक होने के कारण मेरा मन ऐसे अनुचित कार्यों की ओर कभी प्रवृत्त नहीं हुआ।'

शेख असगरअली जी मुल्तान के डिप्टी कमिश्नर भी रहे, आपने पण्डित जी के कैरक्टर रौल (चरित्र-पंजिका) में एक से अधिक बार लिखा था-पूर्णतया प्रामाणिक।

पण्डितजी को इतना सन्तोष कैसे प्राप्त था? वे स्वयं लिखते हैं कि मुजफ्फर गढ़ में उन्हें दलितों, अनाथों व दु:खीजनों तथा आर्यसमाज की सेवा का जो विस्तृत क्षेत्र मिल गया, इसे वे सर्वश्रेष्ठ धन व प्रभु की देन मानते थे।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु
साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

प्रथम पृष्ठ का शेष

गृहमन्त्री श्री राजनाथ सिंह जी...

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का सफलतापूर्वक सम्पन्न होना हम आर्यों के एक गर्व का विषय तो है किन्तु इसकी सफलता के हकदार वह लोग भी कहीं ज्यादा हैं जो देश के उच्च पदों पर आसीन रहते हुए, अनेकों बड़ी जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हुए इतनी व्यस्तता के बावजूद इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अतिथि बनकर हम सब आर्यों को एक अनूठी शक्ति प्रदान कर गए। देश के गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह जी ने न केवल निमंत्रण पत्र स्वीकार कर हमारी हिम्मत बढाई थी बल्कि समापन दिवस के अवसर पर समय पहुंचकर आर्य समाज के मंच के उद्घोषक भी बने थे। अब श्री राजनाथ सिंह को धन्यवाद अर्पित करने की जिम्मेदारी हमारी थी, इस दायित्व का निर्वाहन महाशय धर्मपाल जी और दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने उनके आवास पर पहुंचकर किया। इस अवसर पर महाशय जी ने उनके आगमन भाषण की चित्रों से सजी एक एलबम, शाल, फूलों का गुलदस्ता भेंट करके सम्मान एवं धन्यवाद किया। इस अवसर पर युवा भाजपा नेता श्री योगेश आत्रेय जी भी उपस्थित थे। श्री राजनाथ सिंह जी ने महाशय जी को अपनी ओर से एक फूलों का गुलदस्ता भेंट करके आभार व्यक्त करते हुए कहा कि अन्तर्राष्ट्रीय महा सम्मेलन दिल्ली की भव्यता, आर्यों की एकजुटता तथा इतना बड़ा विशाल सम्मेलन मैंने आर्य समाज के इतिहास में न सुना, न देखा। यह सम्मेलन अपने आप में अदभुत व अकल्पनीय था। उन्होंने कहा महासम्मेलन में भाग लेना मेरे लिए सौभाग्य का विषय था। इस महासम्मेलन में जिस तरह से आर्य समाजियों ने शांति प्रेम और अनुशासन का परिचय दिया उससे आर्य समाज की गरिमा का एक अलग संदेश जन-जन तक पहुंचा है।

सामवेद पारायण यज्ञ का भव्य आयोजन

आर्य समाज शकरपुर के यशस्वी मंत्री आर्य नेता श्री पतराम त्यागी ने अपने निवास पर सामवेद पारायण यज्ञ का भव्य आयोजन ब्रह्मा श्री ब्रजराज शास्त्री के ब्रह्मत्व में 22 दिसम्बर, 2018 से प्रारंभ हुए विशेष यज्ञ की पूर्णाहुति 20 जनवरी 2019 को की गई। इस अवसर क्षेत्र के गणमान्य महानुभावों ने पधारकर यज्ञ में अपनी आहुति अर्पित की जिनमें मुख्य रूप से डॉ देवेन्द्र शर्मा (व. वैज्ञानिक सीएसआईआर), श्री एस.डी. गर्ग (निदेशक सीएसआईआर), श्री रमेश गोयल (पूर्व प्रोफ़ेसर), श्री बीबी त्यागी पूर्व चेयरमैन स्थाई समिति पूर्वी दि.न.नि., श्री आरके शर्मा प्रधान (आरडब्ल्यूए डब्ल्यूए ब्लाक), श्री वेद प्रकाश त्यागी, सनातन धर्मसभा के एसएन पांडेय, श्री वेद प्रकाश वानप्रस्थी, श्री राकेश शर्मा, श्री नंद कुमार वर्मा, श्री प्रभु दयाल सचदेवा, श्री ईश्वर त्यागी तथा श्री पतराम त्यागी जी के पारिवारिक सदस्यों ने अत्यंत श्रद्धा पूर्वक यज्ञ में आहुति अर्पित की।

शोक समाचार

श्री देवेन्द्र आनन्द जी का निधन

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के पूर्व संचालक श्री वीरेन्द्र आर्य जी के ज्येष्ठ भ्राता एवं कोषाध्यक्ष श्री जितेन्द्र भाटिया जी के बहनोई श्री देवेन्द्र आनन्द आर्य जी का 31 जनवरी, 2019 को 58 वर्ष की आयु में हृदय गति रूक जाने के कारण निधन हो गया। वे अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ 1 फरवरी को पंजाबी बाग स्थित शमशान घाट पर किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा रविवार 3 फरवरी को झंग भवन, सैनिक विहार में सम्पन्न हुई जिसमें सभा अधिकारियों के साथ-साथ, आर्य वीर दल, वीरांगना दल एवं निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों के अधिकारियों एवं सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री रामशरण दास आर्य जी का निधन

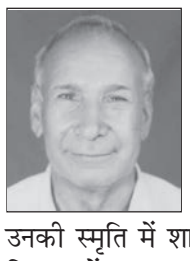

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल के पूर्व महामन्त्री एवं आर्यसमाज किदवई नगर के पूर्व अधिकारी श्री रामशरण दास आर्य जी का 1 फरवरी को लगभग 92 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ लोदी रोड स्थित शमशान घाट पर किया गया।

उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 4 फरवरी को आर्यसमाज जंगपुरा विस्तार में सम्पन्न हुई जिसमें सभा अधिकारियों सहित निकटवर्ती अनेक आर्यसमाज के अधिकारियों एवं सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री बनारसी सिंह जी नहीं रहे

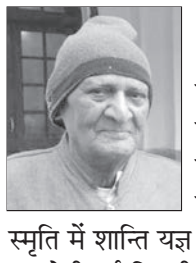

आर्यसमाज के वरिष्ठ पत्रकार, चिन्तक, लेखक एवं वैदिक विद्वान, यूनिवार्ता के मुख्य सम्पादक श्री बनारसी सिंह जी का दिनांक 2 फरवरी, 2019 को प्रात: 5 बजे निधन हो गया। वे कुछ दिनों से वेल्टीनेटर पर चल रहे थे। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से लोदी रोड स्थित शमशान घाट पर किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा दिनांक 5 फरवरी को माता मन्दिर न्यू फ्रेंडस कालोनी नई दिल्ली में सम्पन्न हुई, जिसमें सभा अधिकारियों सहित निकटवर्ती अनेक आर्यसमाज के अधिकारियों एवं सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

गुरुकुल आश्रम आमसेना का
51वां वार्षिक महोत्सव

गुरुकुल आश्रम आमसेना का 51वां वर्ष एवं कन्या गुरुकुल आमसेना का 38वां वार्षिक महोत्सव - धार्मिक मेला 16-17-18 फरवरी, 2019 को गुरुकुल प्रांगण में आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर आयोजित सामवेद ब्रह्मपारायण यज्ञ पं. वीरेन्द्र पाण्डा एवं पं. विशिकेशन शास्त्री ब्रह्मत्व में होगा।

- स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, अधिष्ठाता

पृष्ठ 5 का शेष

धन्यवाद एवं सम्मान समारोह ...

आर्य समाज में एक नई संचेतना लाने का कार्य करेगा साथ ही कुछ विधर्मियों द्वारा सनातन वैदिक धर्म के विरुद्ध किये जा रहे दुष्प्रचार पर भी लगाम लगाने का कार्य करेगा तथा वेद की विचारधारा को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य करते हुए स्वामी जी के सपने को पूरा करने का कार्य करेगा। इसके साथ श्री विनय आर्य जी ने एक के बाद एक योजनाओं से अवगत कराते हुए प्रतिभा विकास कार्यक्रम के बारे ने बताते हुए कहा कि प्रतिभा विकास कार्यक्रम समाज के उन बच्चों को लिए वरदान साबित होगा जो जीवन में आगे बढ़ना तो चाहते है किन्तु आर्थिक रूप से सक्षम न होने कारण अपने सपने मन में दफन करते रहे हैं। इस योजना में देश के शीर्ष पदों की परीक्षा में शामिल करने के लिए युवाओं को आर्य समाज मुफ्त कोचिंग के साथ आवास और भोजन की सुविधा भी उपलब्ध कराएगा। गरीब आर्य परिवारों के बच्चों के सपने पूरा करने का कार्य प्रतिभा विकास कार्यक्रम के तहत पूरा किया जायेगा।

श्री विनय आर्य ने आर्य समाज द्वारा शुरू की गयी अन्य अनेकों योजनाओं को आर्य महानुभावों के बीच रखा तथा सभी ने तालियों से उनका स्वागत किया।

इस अवसर पर आर्य समाज राजनगर के प्रधान श्री सत्यवीर चौधरी जी अंतर्राष्ट्रीय महासम्मेलन की सराहना की तथा दिल्ली सभा द्वारा किये जा रहे सभी कल्याणकारी कार्यों की प्रशंसा करते हुए आर्य केन्द्रीय सभा महानगर गाजियाबाद के अधिकारियों एवं सदस्यों को सम्मान चिन्ह भेंट किये। इस अवसर पर आर्य केन्द्रीय सभा के संरक्षक श्री श्रद्धानन्द शर्मा, मन्त्री श्री नरेन्द्र कुमार पंचाल, एवं कोषाध्यक्ष श्री नन्दलाल मिश्रा सहित बड़ी संख्या में आर्यमहानुभावों, माताओं-बहनों युवाओं की उपस्थिति रही।

विश्व कल्याण गायत्री महायज्ञ

आर्यसमाज ब्रह्मपुरी दिल्ली के तत्त्वावधान में दिनांक 23-24 फरवरी को पात: 7 से दोपहर 2 बजे तक बहुकुण्डीय विश्व कल्याण गायत्री महायज्ञ एवं स्वामी कृष्णानन्द सरस्वती पुण्य स्मृति समारोह का आयोजन किया जा रहा है। यज्ञ ब्रह्मा स्वामी शिवानन्द जी होंगे। भजन श्री कल्याणदेव वेदी एवं प्रवचन स्वामी शिवानन्द जी एवं आचार्य धर्मेन्द्र जी के होंगे। - *टुकीराम भारद्वाज, मन्त्री*

स्वामी दयानन्द जन्मोत्सव

आर्यसमाज डी ब्लाक विकासपुरी नई दिल्ली की ओर से महर्षि दयानन्द जी के 195वें जन्मोत्सव के अवसर 12 फरवरी को भजन संध्या सायं 6:30 बजे से महर्षि दयानन्द वाटिका विकासपुरी में आयोजित की जा रही है। मुख्य अतिथि स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी होंगे।

- हरीश कालरा, प्रधान

पृष्ठ 5 का शेष

पंजाब प्रान्तीय आर्य .....

आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने सभी आयोजकों को इस भव्य आयोजन के लिए बधाई दी। श्री विनय आर्य ने अपने उद्बोधन में कहा कि हम तीनों सभाएं मिलकर आर्य जगत को एक नई दिशा देने के लिए प्रयासरत हैं। हमारा उद्देश्य आर्य समाज की उन्नति करना है, वेद की ज्योति को घर-घर तक पहुंचाना है और महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार करना है। इस अवसर पर महाशय धर्मपाल जी को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिकारियों द्वारा भारत सरकार के द्वारा पदम्भूषण से सम्मानित करने पर हार्दिक बधाई दी और उन्हें विशेष रूप से सम्मानित किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी ने महाशय धर्मपाल जी का प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में पधारने पर विशेष रूप से धन्यवाद किया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी ने सभी मुख्य अतिथियों एवं आर्यजनों का धन्यवाद करते हुए कहा कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब आप सबके सहयोग से इस प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन करती है। मैं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से आप सभी का हार्दिक धन्यवाद करता हूँ और भविष्य में भी इसी प्रकार आपके सहयोग की कामना करता हूँ। - *संयोजक*

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 4 फरवरी, 2019 से रविवार 10 फरवरी, 2019

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 7-8 फरवरी, 2019

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 6 फरवरी, 2019

प्रतिष्ठा में,

लिवेदक

महाशय धर्मपाल	सुरेशचन्द्र आर्य	प्रकाश आर्य	धर्मपाल आर्य	विनय आर्य	सतीश चड्ढा	अनुभव आर्य
स्वागताध्यक्ष	प्रधान	महामंत्री	प्रधान	महामंत्री	दिल्ली प्रभारी 9313013123	संयोजक 7007012901
कुम्भ मेला वेद प्रचार शिविर	सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा		दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा		कुम्भ मेला वेद प्रचार शिविर	

प्रयागराज कुम्भ मेला- 2019

वेद प्रचार शिविर

भ्रमण - यात्रा - कार्यक्रम

दिनांक 13/2/19 (बुधवार)

सांय 6:55बजे : प्रस्थान
नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से

दिनांक 14/2/19 (गुरुवार)

प्रात: 4 बजे : इलाहाबाद स्टेशन पहुंच
प्रस्थान कुम्भ मेला स्थान
पहुँच सेक्टर 11
मेला अधिकारी कार्यालय के सामने
प्रात: 8:30 बजे : प्रात:राश (नाश्ता)
भ्रमण
दोपहर 1:30 बजे ऋषि लंगर
सायं : 4 बजे : यज्ञ भजन प्रवचन
सायं : 7:30 बजे ऋषि लंगर

दिनांक : 15/2/19 (शुक्रवार)

प्रात: 8:30 बजे : प्रात:राश
प्रात: 10 बजे : शोभा यात्रा प्रारम्भ
पीपा पुल से होते हुए
नागवासुकी मन्दिर पर समापन
दोपहर 12:30 बजे : पहुँच - सेक्टर 19
मेला अधिकारी कार्या. के निकट
दोपहर 1:30 बजे : ऋषि लंगर
सायं 3 बजे : यज्ञ भजन प्रवचन का कार्यक्रम
सायं 7:30 बजे : ऋषि लंगर
रात्रि 9 बजे : पहुँच - इलाहाबाद जंक्शन
(दिल्ली हेतु प्रस्थान)

दिनांक 16/2/19 (शनिवार)

प्रात: 8:10 बजे : दिल्ली आगमन
नई दिल्ली रेलवे स्टेशन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह